''हर्षवर्धन''

(1) भान्डी – ममेरा भाई यह हर्ष की माता यशोमती के भाई का पुत्र था। जिसको राज्यवर्द्धन व हर्षवर्धन की सेवा के लिए दरबार में लाया गया था।

(2) कुमार गुप्त व माधव गुप्त – ये उत्तरवर्ती सम्राट मह्रासेनगुप्त के पुत्र थे, जो प्रभाक (हर्ष के पित)के दरबार में निवास करते थे मौखरियो के अतिरिक्त उत्तर वर्तीगुप्तो के साथ भी वर्द्धनो का मैत्री सम्बंध था।

(3) कुरंगक – इस राजदूत ने हर्ष को (हुनोमेदभनके अभियान के) जंग लमें शिकार करते समय – प्रभाकर वर्द्धन की बिमारी की सूचना दिया था।

(4) कुंतल – हर्ष चरित्र से पता चलता हैं कि कुंतल नामक अश्वारोधी ने हर्ष को थानेश्वर की राज्य सभा में आकर सूचना दिया था कि–

''राज्यवर्धन ने मालव सेना को खेल ही खेल में जीत लिया था किन्तु गौडनरेश (शशांक) के दिखावरी शिष्टाचार पर विश्वास करके, वह अकेला शस्त्रहीन दशा में अपने ही भवन में मार डाला गया।

''हर्ष''

भूमिका– ''गुप्त साम्राज्य के विध्वंस के पश्चात् उत्तरी भारत में जिस राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के युग का प्रारम्भ हुआ हर्षवर्धन के राज्यारोहण के साथ ही उसकी समाप्ति हुई। वर्द्धन वंश के इस यशस्वी सम्राट ने अपनी उपाधियो द्वारा उत्तरी भारत के विशाल भूभाग को अपने साम्राज्य के तहत संगठित कर लिया। तथा अशोक और समुद्र गुप्त जैसे प्रतिभाशाली सम्राटो की ही भॉति इतिहास में अपना यश अर्जित किया।

हर्षचरित्र से ज्ञात होता हैं कि कुंतल द्वारा हर्ष को राज्यवर्द्धन की हत्या की सूचना दिये जाने पर वह सिंहासन ग्रभा करने पर संकाच करता है, किन्तु सेनापति सिंहनाद ने उसे इन शब्दों में प्रेरित करता हैं।–

कायरोचित शोक का परित्याग कर राजकीय गौरव को जो अपना पैत्रिक अधिकार हो उसी प्रकार से ग्रहण कीजिए जैसे सिंह मृगशावक को ग्रहण करता है। अब चूंकि राजा की मृत्यु हो चुकी हैं और राज्य वर्द्धन ने पुष्ट गौड़ राजरुपी सर्प के दैृष से अपना प्राण त्याग दिया हैं। अतः इस घोर विपत्ति में पृथ्वी का भार ग्रहण करने वाले आप ही अकेले शेषनाग हैं। राज्य रोहण के समय हर्ष के समय दो समस्यॉए थी –

1. गौड़ नरेश शशांक को मार कर अपने भाई राज्यवर्द्धन की हत्या का बदला देना।
2. राज्यभ्री को कत्तौज के कारागार से मुक्त करना।

'' हर्ष शशांक युद्ध ''

शशांक के विरुद्ध आक्रमण के पहले हर्षवर्द्धन शपथ निम्न शब्दो में ग्रहण करता हैं।

''यदि कुछ ही दिनो में धनुष चलाने की चपलता के घमण्ड में भरे हुए समस्त उदृत राजाओ के पैरो की बेड़ियो की क्षनकार से पूर्ण करके पृथ्वी को गौड़ो से रहित न बना दूँ तो घी से धधकती हुई आग में पतंगे की भांति इस पात की शरीर को भस्म कर दूंगा।– हर्षचरित्र अभियान के प्रथम दिन– कामरुप नरेश भास्कर वर्मा के दूत हंसवेग से मुलाकात व संधि सम्भवतेः यह संधि एक उभयनिष्ठ शत्रुशशांक के मध्य की गयी थी जो हर्षतथा भास्कर वर्मा दोनो की शत्रु था।

पुनः रास्ते में ही हर्ष से उसका ममेरा भाई भान्डी मिला जो राज्य वर्द्धन के साथ दुष्ट मात्रषराज के विद्धध अभियान पर गया था। उसने हर्ष को राज्यवर्द्धन के मरिजीन का सम्पूर्ण वृताते सुनाया तथा यह सूचना दिया कि– गुप्त नामक व्यक्ति ने काअकुव्ज पर अधिकार कर लिया है तथा राज्यश्री कारागार से निकलकर विन्ध्याचल के जंगल में सती होने के लिए भाग गयी हैं।– हर्षचरित्र

अतः हर्ष ने सम्पूर्ण सेना को भाड़ी के नेतृत्व में छोड़कर राज्यश्री को ढूंढने चला गया। यही हर्षचरित्र का वृर्त्तात समाप्त हो जाता हैं। हर्ष शंशाक युद्ध के बारे में हर्षचरित्र में कोई उल्लेख नहीं मिलता हैं।

आर्यमंजुश्री मूलकल्प में उल्लिखित एक श्लोक से पता चलता हैं कि– '' हर्ष नामक राजा पूर्वी भारत की ओर गया तथा पुन्ड नगर में जा पहुँचा। दुष्ट कर्म करने वाला सोम (शशांक) पराजित हुआ। और अपने राज्य के अंदर बंद पड़े रहने के लिए बाध्य किया गया। और गौड़ लोगो द्वारा स्वागत न किये जाने के कारण हर्ष स्वदेश लौटने लगता हैं कि– शशांक जो कत्तौज पर अधिकार कर लिया था– बिना किसी युद्ध के छोड़ दिया। कत्तौज ने पुनः अपनी स्वायत्रता प्राप्त करी है। राज्यश्री को कत्तौज की शासिका बनाया गया और हर्ष उसका संरक्षण। बाद में हर्ष यनिश्वर के स्थान पर कत्तौज को अपनी राजधानी बनाया। यह हर्ष के विस्तृत साम्राज्य पर शासन करने तथा सफलता पूर्वक सैनिक अभियान उत्तम स्थान था। ठीक वैसा जैसे चन्द्रगुप्त को वाकारक राज्य था।

इस प्रकार प्रयाभाव में निश्चित रुप से कुछ ही कहा जा सकता है कि – हर्ष तथा शशांक के मध्य युद्ध हुआ कि नहीं।

''सैनिक अभियान''

हवेन सांग लिखता हैं कि –

''इसके बाद भी हर्ष एक बड़ी सेना लेकर लगातार छः वर्षो तक युद्ध करता रहा। सर्वप्रथम उसने पूर्व की ओर प्रस्थान किया और जिन शक्तियों ने उसकी अधीनता नहीं मानी थी उनको अपने अधीन किया। इसके बाद भी वह तब तक युद्ध करता रहा। जब तक कि पन्च भारत (पंजाब गौड़, कन्नौज मिथिला, उड़ीसा) का स्वामी न ही बन गया। उसके बाद बिना युद्ध किये निरंतर 30 वर्षो तक शांति पूर्वक युद्ध करता रहा।

लेकिन यह उल्लेख वास्तविकता से काफी दूर हैं–

1. पहला पूर्वी अभियान – 606–612 तक– इसमें वह समस्त उ0 प्र0 तथा बिहार का पश्चिमी भाग फीका लगता है कि शशांक का राज्य जिसमें मगध बंगाल तथा उड़ीसा सम्मिलित था वह अपने इस अभियान में नहीं जीत पाया था।
2. मध्यकालीन अभियान– वलभी युद्ध– सिन्ध के साथ युद्ध, पुलकेशिनगा के साथ युद्ध
3. द्वितीयपूर्वी अभियान– शशांक के समय से युद्ध हर्ष नेपाल सम्बंध, काश्मीर सम्बंध, हर्ष और कामरुप, हर्ष और द0 भारत।

प0 भारत का अभियान

मध्य कालीन अभियान, खा के बाद से

(1) वसभी युद्ध– वसभी (गुजरात) ध्रव सेना (629–30 द0 के मध्य)

शरण कर्ता– गुर्जर नरेश (भदौड़ा)

नौसारोदान पत्र के अनुसार– हर्ष द्वारा पराजित वसभी नरेश का परित्याग करने के कारण प्राप्त यश का वितान भी दद के ऊपर निरंतर झूलता रहा।

''श्री हर्ष देवा भिभूतो, श्री बलभी पति परित्रानोप जातः भम्र दद भ्रति भ्रम, यशोविवानः श्री ददः।

(2) सिन्धविजय,

हर्षचरित्र से पता चलता है कि हर्ष ने सिन्धुराज को युद्ध क्षेत्र में विमश्रित करके उसकी राज्यलक्ष्मी को छीन लिया था।

अत्र पुरुषोत्रमेन–सिन्धुराजं प्रमथ्य लक्ष्मी रात्मी यकृता

इससे ज्ञात होता हैं कि सिन्धु राज पराजित तो हुआ लेकिन उसका राज्य नहीं छीना गया। यथा समुद्र गुप्त दक्षिणा पथ –धर्म विजयी शासक की नीति अपनायी गयी लगता हैं हर्ष उससे भेंट उपहार आदि लेकर ही संतुष्ट हो गया तथा उसके राज्य को वापस लौटा दिया।

(3) हर्ष पुल के भिन्न युद्ध– नर्वदा नदी पर हर्ष पराजित हुआ दो प्रमाण–

1. एहोल अभिलेख – के अनुसार अपार ऐश्वर्य द्वारा पासित सामन्तो की मुकुट मणियो की आभा से आच्छादित हो रहे थे चरण कमल जिसके युद्ध में हाथियो की सेना के मारे जाने के कारण जो भयानक दिखाई दे रहा था ऐसे हर्ष के आनन्द को उसने भय से विगलित कर दिया।

अपरिमित, विभूति, स्फीति, सामन्तसेना।

भयविगलित हर्षो येन चाकारि हर्ष।।

2. हुसेन सांग लिखता– उसने छः वर्ष तक लगातार युद्ध कर कई शाक्तियों को पराजित किया परन्तु मो–हो–ल च अ अर्थात् महाराष्ट्र का शासक बड़ा वीर तथा स्वाभिमानी था। उसने हर्ष की अधीनता नहीं मानी।

3. हुसेन सांग की जीवनी से पता लगता हैं– राजा शीला दित्य अपन सेनापतियो की अपूर्ण सफलता तथा कौशल पर गर्व करते हुए आत्मविश्वास के साथ स्वंय सेना का नेतृत्व सम्भालते हुए इस राजा से लड़ने के लिए गया। किन्तु उसे पराजित और अधीन करने में असफल रहा।

द्वितीय पूर्वी अभियान – पुल के भिन के विरुद्ध असफलता ने उसका नर्वदा नदी के दक्षिण में प्रसार रोक दिया। इसके बाद हर्ष ने पूर्वीभात की विजय के निमित्त एक दूसरी सैनिक योजना बनाई।

1. शशांक – इसके राज्य में मगध बंगाल तथा उड़ीसा शामिल थे।

1. चीनी लेखक मा–त्वानत्सिन लिखता है कि सर्वप्रथम 641 में हर्ष ने मगधराज की उपाधि धारण की थी।

2. हवेनसांग की जीवनी से पता चलता हैं कि ''इसी समय हर्ष ने उड़ीसा मे जयसेन नामक एक बौद्ध विद्वान को 80 बड़े गॉवो की आयदान में दिया था।

3. हवेन सांग के अनुसार, हर्ष– भाक्कर वर्मा के निमंत्रण पर कामरुप जाते समय बंगाल के कजंगल नामग स्थान पर सैनिक शिविर डाल कर पड़ा हैं।

इससे ज्ञात होता हैं कि हर्ष ने शशांक के तीनो राज्य पर अधिकार कर लिया था। लेकिन चीनी साद्वो के आधार पर यह भी निश्चित होता हैं कि 637 A. D. में शशांक की मृत्यु के बाद हैं। हर्ष ने उसके द्वारा शासित राज्यो मगधा बंगाल तथा उड़ीसा पर अपना अधिकार किया होगा शशांक जीवनकाल में वह उसे किसी भीर प्रकार की क्षति नहीं पहुँचा सका।

हर्ष नेपाल– हर्ष ने हिमाचलच्छित पर्वत के दुर्गम प्रदेश से कर प्राप्त किया था।

राधाकुमुद मुखर्जी के अनुसार– नेपाल में हर्ष सम्वतः का प्रचलन था।

हर्ष कश्मीर :– राधाकुमुद मुकर्जी ने जीवनी के आधार पर बताया हैं कि काश्मीर पर हर्ष का अधिकार था।

जीवनी– बुद्ध के प्रांत की सत्ता

हर्ष व कामरुपः– भास्कर वर्मा –हवेन सांग के बदले वह अपना सर देना पसन्द करेगा।

हर्ष व दक्षिणी भारत– दक्षिणी अभियान

हर्ष की दानशीलता

हर्षकालीन अभिलेखो से ज्ञात होता हैं कि राजकीय आय से जो आमदनी होती थी उसे चार प्रकार से खर्च किया जाता था।

प्रथम– धार्मिक कार्योपर
दूसरा– राजकीय पदाधिकारियो पर
तीसरा– विज्ञानो को पुरस्कार देने में।
चौथा– विभिन्न सम्प्रदाओ में दान देने में खर्च किया जाता था।

————————————————————

'' कुषाण साम्राज्य ''

उत्पत्ति– कुषाण वंश का प्रारम्भिक इतिहास हमें चीनी ग्रंथ सिएन–हान स् व हाऊ–हानशू से ज्ञात होता हैं।

कुषाण यूची जाति की एक शाखा थे, जो पश्चिमी चीन के गोवी प्रदेश में निवास करती थी। 165 B.C. के लगभग – हुँगनू नामक एक अन्य पड़ोसी जाति से पराजित होकर वे अपना मूल– स्थान छोड़ने के लिए बाहय हुए। अपने मूल स्थान से द0 पश्चिम की ओर जाते समय इन्होंने इला नदी की घाटी में निवास करने वाली वुन्सन नामक एक अन्य जाति पर आक्रमण कर उसे परास्त किया तथा उसके राजा की हत्या कर दिया।

इसके बाद यूची लोग आगे पश्चिम की ओर बढ़े और वे दो शाखाओ में बॅट गये।

1. छोटी शाखा– यह द0 की ओर गई और तिब्बत की सीमा में बस गई।
2. मुख्य शाखा– यह शाखा द0 पश्चिम में आगे बढ़ती हुई सीर दरिया में निवास करने वाली शक जाति से जा टकराई तथा शको को वहाँ से खदेड़ कर वहाँ निवास करने लगी।

लेकिन इला घाटी की वुसुन जाति ने शीघ्र ही सीर दरिया में निवास करने वाली यूची जाति पर आक्रमण कर दिया। अततः यूची जाति पराजित होकर सीर दरिया को छोड़ दिया।

यहाँ से वे दूर पश्चिम की ओर बढ़ते हुए ताहिया (बैक्ट्रिया)पहुॅचे तथा वहाँ के निवासियों को आसानी से परास्त कर दिया। यूची जाति ने यहाँ अपना राज्य स्थापित किया। तथा वोखारा को अपनी राजधानी बनाया।

चीनी इतिहासकार मानक के विवरण से ज्ञात होता हैं कि यूची लोग अब खानाबदोश नहीं रहें। वे शीघ्र ही 5 शाखाओ में विभक्त हो गये।

1.हिऊमी 2.शुआंगन्सी 3.कुई शुआंग (कुषाण) 4.हिन्तुन 5. काओफू

चीनी इतिहासकार– फान ए के विवरण अनुसार–

इस विभाजन के 100 वर्षो बाद कुई शुआंग के सरदार (यावगू)क्यु–त्सियु म्यो ने अन्य चारो राज्यो को विजित कर उन्हें एक शाक्तिशाली राजतंत्र के तहत संगठित कर दिया। तथा स्वयं राजा बन बैठा। यावगू की समता कुजुल– कड फिसेस से की जाती हैं इस शाखा के राजाओ ने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका की गई हैं।

प्रसार–

कुजुल कड फिसेस अथवा कड फिसेस प्रथम पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि इसने यूची जाति की अन्य चार शाखाओ को अपने राज्य में मिला लिया था। अपनी स्थिति दृझ़ करने के पश्चात् इसने राज्य विस्तार का कार्य प्रारम्भ किया।

1. पानकू के ग्रंथ – हाऊहानशू से ज्ञात होता हैं कि इसने पार्थिया पर आक्रमण कर काओ फू (कावुल) द्वारा कोशिया व किपिन पर अधिकार कर लिया।

इस प्रकार वह भारत के पश्चिमोत्तर भाग का शासक बन बैठा।

2. कुजुक के दो प्रकार के सिक्के मिलते हैं–

प्रथम प्रकार के सिक्को के मुख भाग पर काबुल के अंतिम शासक हर्मियस का नाम यूनानी लिपि में उत्तीर्ण हैं। तथा पृष्ठ भाग पर कुजुल का नाम खरोष्ठी लिपि में लिखा हुआ हैं।

दूसरो प्रकार के सिक्को पर – उसकी राजकीय उपाधियाँ जैसे– ''महाराजस, महतस कुषण –कुजुल कफस'' उत्तीर्ण हैं।

निष्कर्षः– इस आधार पर विद्वानो ने निष्कर्ष निकाला है कि प्रारम्भ में कुजुल (काबुल) पवन नरेश हर्मियस के अधीन था। हर्मियस के बाद काबुल क्षेत्र में पहलवो की सत्ता स्थापित हुई। ऐसा प्रतीत होता हैं कि पहलवो को परास्त कर कुजुल ने काबुल तथा कंघार पर अधिकार कर लिया था।

3. गंधार– वी सी पांडे ने निम्न साक्ष्यो के आधार पर गंधार को भी कुजुल के अधीन माना हैं।

1. सिरकप (तक्षशिला) में उसकी मुद्रायें मिली हैं।

2. 136 तिथि के तक्षशिला अभिलेख में किसी महाराज, महाराजाधिराज–देवपुत्र का उल्लेख हैं जिसका समीकरण कुजुल फड़ा फिसेस से लिया जाता हैं।

साम्राज्य विस्तार– कुजुल के समय कुषाण साम्राज्य में अफगानिस्तान पार्थिया काबुल गंधार कथिस आदि सम्मिलित थे। कुजुल ने मात्र तांबे के सिक्को को प्रचलित करवाया था। जिन पर यूनानी तथा खरोष्ठी दोनो लिपियो में लेख उत्कीर्ण हैं। उसके सिक्को पर धर्मथिदस तथा धर्मथित (धर्म में स्थित)उत्कीर्ण मिलता हैं। इस आधार पर विद्वानो ने उसे बौद्ध धर्मावलम्बी

बताया हैं। उसने महाराज तथा राजाधिराज की उपाधि धारण किया था। उसका शासन काल– 15 A. D. से 18 A. D. तक माना जाता हैं।

(2) विम कडफिफेस

कुजुल कडफिसेस की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विमकड फिसेस सिहांसन रुढ़ हुआ जिसे कडफिसेस के नाम से भी जाना जाता हैं। यह अपने पिता की भॉति ही वीर तथा महत्वाकांक्षी था। सर्वप्रथम इसी ने भारत में कुषाण साम्राज्य की स्थापना की।

साम्राज्य विस्तार –

1. सिन्घ–चीनी ग्रंथ– हाऊधन्नशू से पता चलता हैं कि उसने तिन्एन चू की विजय की तथा वहाँ अपने एक सेनापति को शासन करने कि लिए नियुक्त किया। तिएनयू का समीकरण सिन्धु द्वारा सिंचित, पंजाब क्षेत्र से किया गया हैं।

2. पूर्वी उत्तर प्रदेश– कुछ विद्वानो ने जैसे स्मिथ आदि ने लेखो के प्राधि स्थान के आधार पर विम के राज्य को पूर्वी उत्तर प्रदेश के वाराणसी क्षेत्र तक माना हैं।

तर्क– इसका तर्क हैं कि विम के उत्तराधिकारी कनिष्ठ के दूसरे तथा तीसरे वर्ष के लेख कोशाम्बी तथा वाराणसी से मिले हैं। जिससे ज्ञात होता हैं कि ये क्षेत्र कनिष्ठ को उत्तराधिकार में मिले थे। क्यों कि कनिष्ठ अपने प्रारम्भिक काल में ही इन्हें विजित नहीं कर सकता। दूसरे यहाँ से विम के सिक्के भी मिले हैं।

3. बिहार – वम्सर बवासाढ़ तथा भीरा से भी विम के सिक्के मिले हैं।

4. मथुरा – मथुरा के पास मार नामक स्थान से सिंहासन पर विराजमान एक विशाल मूर्ति मिली हैं। जिस पर महाराज राजाधिराज देवपुत्र कुषान पुल षाहि वेम तक्षम् लेख खुदा हुआ हैं।

K.P. जायसकाल ने इस लेख के विम की पहचान विम कडाफिसेस से की हैं। यदि यह समीकरण सही मान लिया जाय तो विम का राज्य मथुरा तक विस्तृत था। परन्तु एक मात्र सिक्को और लेखो के प्राप्ति के आधार पर कोई निष्कर्ष निकालना ज्यादा तर्क सगत नहीं लगता है।

इसने लगभग 65 A. D. से 78 A. D. तक शासन किया।

(3) कनिष्ठ प्रथम 78 A. D.

मार्शल का मत हैं कि विम की मृत्यु के बाद कुषाण साम्राज्य में कुछ अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी। इस काल में अनेक गवर्नरो ने सोटर मेगस के नाम से भारत में राज्य किया। इनका यह भी मत है कि विम के लगभग 20 वर्ष बाद जो भी लेकिन कनिष्ठ निश्चित रुप से भारत के कुषाण राजाओ में सबसे महान था। उत्तरी बौद्ध अनुभुतियो में उसका नाम प्रभामंडल से युक्त हैं।

कनिष्ठ की उत्पत्ति वंश एवं प्रारम्भिक जीवन में ही सम्पूर्ण हैं। यह भी स्पष्ट नहीं हैं कि पूर्ववर्ती कडफिसेस राजाओ से उसका क्या सम्बंध हैं। स्कोनकोनो का विचार हैं कि कनिष्ठ यूची जाति की छोटी शाखा से सम्बंधित था। तथा भारत में खोलन से आया था। किन्तु इस मत को निर्पेक्षतया नहीं स्वीकार किया जा सकता क्यो कि चीनी ग्रंथो में कनिष्ठ के वंशज वासुदेव को यूची जाति की बड़ी शाखा का शासक बताया गया हैं। कुछ विद्वान कनिष्ठ को विम का वंशज बताते हैं। अपने मत के पक्ष में ये यह तर्क देते हैं कि– ''मथुरा के देवकुल में विम और कनिष्ठ दोनों की मूर्तियां मिली हैं।

साम्राज्य विस्तार व विजयें–

कनिष्ठ एक महान विजेता था सिहांसन रुढ़ होते ही उसने अपना विजस अभियान प्रारम्भ किया। फलस्वरुप उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना किया जो चीनी तुर्किस्तान से लेकर पूर्व मे कम से कम सारनाथ (U. P.) तक विस्तृत था।

इस कुषाण साम्राज्य के साथ–साथ तत्कालीन संसार में तीन और साम्राज्य थे–

1.पार्थिक साम्राज्य 2. चीनी साम्राज्य 3. रोमन साम्राज्य

प्रथम दो (पार्थिया व चीनी) के साथ कनिष्ठ के सम्बंध शत्रुतापूर्ण थे।

परन्तु तीसरे के साथ (रोम) मित्रता पूर्ण।

1. पार्थिया से युद्ध – चीनी साहित्य का कथन हैं कि नान सी के राजा ने देवपुत्र कनिष्ठ पर आक्रमण किया परन्तु इसमें उसे सफलता न मिली। कनिष्ठ ने उसे परास्त कर दिया। नान–सी का समीकरण पार्थिया से किया जाता हैं। दोनो में युद्ध का मूलकारण व्यापारिक था। व्यापारिक दृष्टिकोण से बैक्ट्रिया की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण थी। जिस पर कनिष्ठ का अधिकार है शायद इसी कारण पार्थिया नरेश ने कनिष्ठ पर आक्रमण किया हैं

दूसरा मत– पार्थिया का एरियाना प्रदेश इस समय कुषाणो के अधीन था स्वाभाविक है कि पार्थिया अपने इस प्रदेश को पुनः हस्तगत करने का अवसन खोज रहा होगा।

2. चीन के साथ युद्ध – जिस समय कनिष्ठ भारत में राज्य कर रहा था उसी समय चीन में हान वंश का राज्य था उसका सेनापति पान चाओ ने खोतान काशगर कुचा काराशहर आदि को जीतकर सम्पूर्ण चीनी तुर्किस्तान को चीनी अधिकार में कर लिया था। अंततः चीनियो की इस साम्राज्य वादी नीति से भारत के कुषाण साम्राज्य के लिए एक खतरा पैदा हो गया था।

अतंतः चीनी तुर्किस्तान के प्रश्न पर कनिष्ठ तथा चीन के बीच युद्ध छिड़ गया।

चीनी स्रोतो से ज्ञात होता हैं कि 73 से 94 A. D. के बीच चीन का प्रसिद्ध सेनापति पान चाऊ अपने हानवंशी नरेश के आदेश पर चीनी तुर्किस्तान की विजय के लिए रवाना हुआ। तब कनिष्ठ ने 70 हजार अश्वारोहियो की एक विशाल सेना सुगंलिन पर्वत के पार चीनियो से युद्ध करने के लिए भेजी।

चीनी इतिहासकार युद्ध का कारण यह बताते हैं कि कनिष्ठ में चीनी सम्राट के समक्ष अपनी समानता स्थापित करने के लिए सेनापति पानचाऊ के पास अपना एक दूत भंयकर चीनी राजकुमारी से विवाह का प्रस्ताव किया। चीनी सेनापति ने इसे अपमान समझकर दूत को बंदी बना लिया।

अतः कनिष्क ने यह सूचना पाते ही चीन पर चढ़ाई कर दी। लेकिन शीत और पर्वतीय मार्गो की कठिनाईयो के कारण कनिष्क पराजित हुआ। और उसे प्रतिवर्ष चीन को कर देने का वचन देना पड़ा।

कनिष्क की इस असफलता का संकेत एक भारतीय अनुभूति से भी होता हैं। जिसमें कनिष्क घोषणा करता हैं कि मैनें उत्तर को छोड़कर अन्य तीन क्षेत्रो को जीत लिया हैं।

परन्तु ऐसा प्रतीत होता हैं कि कनिष्क ने शीघ्र ही अपनी पराजय का बदला ले लिया। हवेन सांग के विवरण से ज्ञाता होता हैं कि सुंगलिन पर्वत के पूर्व में भी उसका अधिकार था। यहॉ सुंगलिन के पूर्व का तात्पर्य चीनी तुर्किस्तान से हैं। जिसमें खोतान यारकद तथा काशगर सम्मिलित थे।

प्रो0 वेली को खोतान से एक पान्डु सिसि मिलि हैं जिसमें बैक्ट्रिया के शासक चन्द कनिष्का का उल्लेख हैं। इससे भी कनिष्क का खोतान पर अधिकार प्रमाणित होता हैं।

(3) रोम साम्राज्य से सम्बंध

इस समय रोम और पार्थिया साम्राज्य के बीच शत्रुता थी। पार्थिया कुषाण साम्राज्य का भी शत्रु था। स्वाभावतः दोनो एक दूसरे के करीब आये। इस काल में भारत व रोम के बीच व्यापारिक व कर नीतिक सम्बंध बढ़े। दोनो ने एक दूसरे की राजसभा में अपने दूत भेजे।

(4) पूर्वी भारत की विजय

क – उत्तर प्रदेश– अनेक साक्ष्यो से कनिष्क का अधिकार U. P. के भिन्न–भिन्न भूखंडो पर सिद्ध होता हैं।

1. आजमगढ़ तथा गोरखपुर तक कनिष्क की मुद्राये मिली हैं।
2. कनिष्क के अभिलेख कौशाम्बी सारनाथ और भावस्त्री से मिले हैं।
3. कनियक कालीन मूर्तिया भी मथुरा सारनाथ तथा कौशाम्बी व भावस्त्री आदि स्थानो में मिली हैं।
4. जनभुति तिब्बती ग्रंथो से विदित होता हैं कि कनिष्क ने सोकेद (साकेत–अयोध्या) के राजा को पराजित किया था।

निष्कर्षः– इस आधारो पर कहा जा सकता हैं कि उ0 प्र0 का अधिकांश भाग कनिष्क के अधीन था।

ख – बिहार

1. जनभुति– धर्मपिटक निदान सूत्र से पता चलता हैं कि कनिष्क न पारलिपुत्र पर आक्रमण कर उसके राजा को पराजित किया। तथा हर्जान के रुप में बड़ी रकम की मांग किया। परन्तु इसके बदले में कनिष्क अश्वघोष बुद्ध का भिक्षापात्र व एक अद्भुद मुर्गापाकर ही संतुष्ट हो गया।

2. मौद्रिक साक्ष्य –

1. स्पूनर को पाटलिपुत्र की खुदाई में असंख्य कुषाण सिक्के मिले थे।
2. सिक्को का एक ढेर वक्सर (भोजपुर) से भी मिला है।
3. वैशाली तथा कुम्रहार से भी कुषाण सिक्के मिले हैं।
4. बोधगया से हुविष्क के समय का मृठमूर्ति फलक मिला हैं।

ये सभी विहार पर कनिष्क के अधिपत्य को इंगित करते हैं।

3. बंगाल– बंगाल के कई स्थानो जैसे– ताम्रलिप्ति तथा महास्थान से कनिष्क के सिक्के मिले हैं।

4. उड़ीसा – उड़ीसा प्रांत के मयूरभंज शिशुपालगढ़ पुरी गंजाम आदि से कनिष्क सिक्के मिलते हैं।

5. **मध्यप्रदेश –**

1. बिलासपुर तथा कुछ स्थानो पर कनिष्क और उसके उत्तराधिकारियो की कुछ मुद्राये मिली हैं।

2. सांची से प्राप्त मथुरा शैली की मुर्तियो पर कुषाण राजाओ के नाम उत्कीर्ण है।

निष्कर्षः– अन्य साक्ष्यो के अभाव में मात्र सिक्को व कुछ मूर्तियो के प्रसार से कनिष्क का अधिकार M.P. बंगाल तथा उड़ीसा पर मान लेना तर्कसंगत न होगा। से व्यापारिक प्रसंग भी जा सकते थे। तथापि पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार पर कनिष्क का अधिकार सुनिश्चित हैं।

हाल ही में B. H. U. के k.k. सिन्हा व B. P. सिंह के निर्देशन में बलिया जिले के खेरोडीह नामक स्थान पर खुदाई की गई जहाँ एक समृद्धशाली कुषाणकालीन के अवशेष मिले हैं।

(2) पश्चिम भारत की विजय

1. कनिष्क के शासन काल को ग्यारहवें वर्ष का अभिलेख सुई बिहार से मिला हैं

2. इसी वर्ष का एक अभिलेख जेदहा (पेशावर) से भी मिला हैं।

   इससे यह प्रमाणित होता हैं कि अपने शासनकाल के ग्यारहवे वर्ष में उसने निचली सिन्धुघाटी को जीत लिया था।

3. कपिशा में कनिष्क के अधिकार की पुष्टि हवेन सांग भी करता हैं।

4. राजतंर गिजी से पता चलता है कि उसका काश्मीर पर अधिकार था।

(3) दक्षिणी भारत

सांची से कनिष्क संवत 28 का एक लेख मिला हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता हैं कि दक्षिण में कम से कम विन्ध्यपर्वत तक कनिष्क का साम्राज्य विस्तृत था।

(4) मध्य एशिया

हवेन सांग के विवरण से प्रगट होता हैं कि मध्य एशिया में उसका साम्राज्य पारकंद, खोतान और काशगर तक विस्तृत था।

बैक्ट्रिया– यह कनिष्क को विम से उत्तराधिकार में मिला था।

अफगानिस्तान– काबुल अभिलेख से ज्ञात होता हैं कि अफगानिस्तान के कुछ भाग पर हुविष्क का अधिकार था। लेकिन यह विजय हुविष्क की न होकर कनिष्क की ही प्रतीत होती हैं।

गंधार– हवेनसांग तथा चीनी ग्रंथो से ज्ञात होता हैं कि गंधार कनिष्क के अधीन था। यह उस समय कला का प्रख्यात केन्द्र था। मंधार शैली

साम्राज्य सीमा– इस प्रकार उसका साम्राज्य उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण में विन्ध्यापर्वत तक तथा पश्चिम में उत्तरी अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार तक विस्तृत था।

पुरुषपुर इस विशाल साम्राज्य की राजधानी थी लेखो में कनिष्क को महाराजा धिराज देवपुत्र कहा गया हैं। प्रशासन की सुविधा के लिए उसने अपने साम्राज्य को अनेक क्षतपतियो में विभाजित किया था। बड़ी क्षत्रयी के शासक का महाक्षत्रय तथा छोटी के शासक को क्षत्रप कहा जाता हैं। कभी–कभी एक ही प्रदेश पर दो क्षत्रप शासन करते थे।

कनिष्क लेखो में किसी सलाहकारी परिषद का उल्लेख नहीं मिलता। कुषाण लेखो में हम पहली बार दण्डनायक तथा महादण्डनायक जैसे पदाधिकारियो का उल्लेख पाते हैं। सम्भवतः ये सैनिक अधिकारी थे। ग्रामो की शासन ग्रामिक द्वारा जलाया जाता था।

राज्या रोहण की तिथि–

1. पलीट कनेडी – 58 B. C. में कनिष्क राज्या रोहण मानते हैं।
2. R. C. Majoomdr – 248 A. D.
3. R. G. Bsndarkar – 278 A. D.
4. Marsgsl Stank ono Smitg – 125 A. D.
5. Fnrgution Oldeniurg Tgoms Banerjee Rapson G. C. Cgaudary –78 A. D.

यही तिथि सत्य मानी गयी हैं।
क्यों कि कनिष्क 78 A. D. के शकसंवत का प्रवर्तक था।

Most – कनिष्क की तिथि की समस्या पर विचारार्थ 1913, 1960 A. D. में लंदन में दो अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किये गये। द्वितीय सम्मेलन में आम सहमति 78 A. D. के पक्ष में बनी रही। इसके समापन भाषण में A. L. Bosgam ने कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 78 A. D. में रखने के पक्ष में एक नया तर्क प्रस्तुत किया।

इसके अनुसार कनिष्क की तिथि 78 न मानने की स्थिति में यह बता सकना कठिन होगा कि गंधार तथा पंजाब में किस संवत का प्रचलन था।

कनिष्क का स्थान–

कनिष्क का स्थान भारतीय इतिहास में एक साम्राज्य निर्माता विजेता धर्म विद्या तथा कला का उदार संरक्षण तथा बौद्ध धर्म के प्रचारक के रुप में हैं। वास्तव में सैनिक विजओ की अपेक्षा उसकी महानता का कारण उसके जीवन का शांत पक्ष माना जाता हैं। एम0 सी0 चौधरी ने उचित ही कहा हैं कि–

''कनिष्क का उत्तरी भारत की बौद्ध अनुश्रुतियो में वही स्थान हैं जो द0 बौद्ध अनुश्रुतियो में अशोक का हैं।

स्थिम तथा कुमारस्वामी– कला की दृष्टि से कुषाण कला को स्वर्णयुग मानते हैं।

आर. एस. शर्मा आर्थिक दृष्टि से साम्राज्य भारत के बाहर बैक्ट्रिया, अफगानिस्तान मध्य एशिया तथा उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांन्त पर भी उसका स्वत्व था।

धर्म सहिष्णुकता– यद्यपि कनिष्क निःसदेह अन्य धर्मो के प्रति सहिष्णु था। उसके सिक्को पर बुद्ध की मूर्तियो के अतिरिक्त यूनानी, एलमी मिश्री जलथस्त्री तथा हिन्दू देवी देवताओ की मूर्तियां भी उत्कीर्ण थी। कनिष्क में चन्द्रगुप्त जैसी सैनिक योग्यता तथा अशोक जैसी धार्मिक उत्साह था।

कवि – अश्वघोष (नागार्जुन, प्रज्ञा वारमितासुत) पार्श्व वसुमित संघरक्ष आदि। चरक

कला व स्थापत्य

1. पुरुष में यवर का निर्माण– 400 फीट 13 मंजिल
2. विशाल संघाराम का निर्माण – (टावर के पास ही)
   इसे कनिष्क चैत्य भी कहा जाता हैं यह विश्व प्रसिद्ध हैं।
3. काश्मीर में कनिष्कपुर तथा तक्ष शिला में सिरकप नामक नये नगर की स्थापना कराया था।
4. दो शैलियो का विकास–

1. गंधार शैली
2. मथुरा शैली
3. महायान शाखा का उदय।

मथुरा से एक मूर्ति मिली हैं 5 फिट 7 इंच मथुरा शैली

महाराज राजाधिराज– देवपुत्र में कनिष्क

————————————————————